P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-7* (Part-1) October- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarkina An Analisation*

स्वाङ्ग पद का साङ्गोपाङ्गविश्लेशणपूर्वक "स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्" सूत्र का परिशीलन

प्रो. विनोद कुमार झा
अध्यक्ष,
व्याकरण विभाग,
श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी,
वेरावल, गुजरात

सारांश

प्रस्तुत सूत्र से स्त्रीत्व की विवक्षा में विकल्प से 'ङीष्' प्रत्यय होता है। इस सूत्र में पठित 'स्वाङ्ग' पद का 'अपना अङ्ग' अर्थ नहीं है, अपितु व्याकरण में यह एक पारिभाषिक शब्द है। वैयाकरणों ने इनको तीन प्रकार से परिभाषित किया है, जो इस प्रकार हैं– 1. अद्रवं मूर्त्तिमत् स्वाङ्गं प्राणिस्थमविकारजम् 2. अतत्स्थं तत्र दृष्टं च 3. तेन चेत्तत्तथायुतम्। 'स्वाङ्ग' के इन तीन प्रकार के परिभाषाओं को सोदाहरण प्रस्तुत कर इस सूत्र के दो उदाहरण भी प्रस्तुत किये गये हैं। साथ ही सूत्र में आने वाले पदों का पदकृत्य भी सोदाहरण प्रस्तुत करते हुए इस सूत्र के विभिन्न अपवाद सूत्रों को भी अर्थ व उदाहरण सहित दर्शाये गये हैं।

मुख्य शब्द : स्त्रीत्व, विवक्षा, उपधा, असंयोगोपध, अद्रव, मूर्त्तिमत्, स्वाङ्ग, प्राणिस्थ, अविकारज, अतत्स्थ, तथायुत, अतिकेशी, चन्द्रमुखी, उपसर्जन आदि।

प्रस्तावना

प्रकृत सूत्र असंयोगोपध जो उपसर्जनसंज्ञक/उपसर्जन=गौण व स्वाङ्गवाची शब्द, तदन्त, अदन्त प्रातिपदिक से पर स्त्रीत्व की विवक्षा में विकल्प से 'ङीष्' प्रत्यय करता है। इस सूत्र के अध्ययन से स्वाङ्ग पद का उदाहरण, प्रत्युदाहरण सहित सम्पूर्ण ज्ञान होता है। प्रसिद्ध प्रयोग चन्द्रमुखी के ज्ञान के साथ चन्द्रमुखी का वैकल्पिक रूप चन्द्रमुखा का भी ज्ञान होता है।

सूत्र

(विधि सूत्र) स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्– 4/1/54

विभक्ति, वचन–निर्देश

स्वाङ्गात्– 5/1, च– अव्यय पद, उपसर्जनात्– 5/1, असंयोगोपधात्– 5/1।

सन्धि–विच्छेद

स्वाङागाच्च= स्वाङ्गात्+च ("स्तोः श्चुना श्चुः"[1]– त्<च्)। चोपसर्जनात्= च+उपसर्जनात् ("आद्गुणः"[2]– अ+उ<ओ)। उपसर्जनादसंयोगोपधात्= उपसर्जनात्+असंयोगोपधात् ("झलां जशोऽन्ते"[3]– त्<द्)। असंयोगोपधात्= असंयोग+उपधात् ("आद्गुणः"– अ+उ<ओ)।

समास

संयोग उपधायां यस्य स संयोगोपधः (बहुव्रीहि समास)। न संयोगोपध इति असंयोगोपधः (नञ्तत्पुरुष समास), तस्मात् असंयोगोपधात्।

अधिकार

प्रत्ययः[4]– 3/1/1– प्रत्ययः। परश्च[5]– 3/1/2– परश्च। ङ्याप्प्रातिपदिकात्[6]– 4/1/1– प्रातिपदिकात्। स्त्रियाम्[7]– 4/1/3– स्त्रियाम्।

अनुवृत्ति

अजाद्यतष्टाप्[8]– 4/1/4– अतः। अन्यतो ङीष्[9]– 4/1/40– ङीष्। अस्वाङ्गपूर्वपदाद्वा[10]– 4/1/53– वा।

नोट

'असंयोगोपधात्' और 'उपसर्जनात्' ये दोनों पद 'स्वाङ्गात्' में अन्वित होते हैं। 'स्वाङ्गात्' एवं 'अतः' ये दोनों 'प्रातिपदिकात्' के विशेषण हैं, अतः इनसे "येन विधिस्तदन्तस्य"[11] परिभाषा सूत्र से तदन्तविधि हो जाती है।

वृत्ति

असंयोगोपधम् उपसर्जनं यत् स्वाङ्गं तदन्ताद् अदन्ताद् ङीष् वा स्यात् (स्त्रियाम्)। केशान् अतिक्रान्ता अतिकेशी, अतिकेशा। चन्द्रमुखी, चन्द्रमुखा। असंयोगोपधात् किम्? सुगुल्फा। उपसर्जनात् किम्? शिखा।

अर्थ

असंयोगोपध (जिसकी उपधा में कोई संयोग न हो, ऐसे जो), उपसर्जनसंज्ञक/उपसर्जन=गौण व स्वाङ्गवाची शब्द, तदन्त, अदन्त प्रातिपदिक से पर स्त्रीत्व की विवक्षा में विकल्प से 'ङीष्' प्रत्यय होता है।

विशेष

सूत्र में पठित 'स्वाङ्ग' पद का 'अपना अङ्ग' अर्थ नहीं समझना चाहिए। व्याकरण में यह एक पारिभाषिक शब्द है। वैयाकरणों ने इनको तीन प्रकार से परिभाषित किया है, जो इस प्रकार हैं–

अद्रवं मूर्त्तिमत् स्वाङ्गं प्राणिस्थमविकारजम्[1]

जो पदार्थ द्रव (तरल) न हो, मूर्त्तिमान् (दृश्य) हो, विकार से उत्पन्न न हो तथा प्राणियों में स्थित रहता हो, वह 'स्वाङ्ग' कहलाता है। जैसे– प्राणी में स्थित केश, मुख, स्तन आदि। इन केशादिशब्दान्त अदन्त प्रातिपदिक से वैकल्पिक 'ङीष्' प्रत्यय होकर क्रमशः सुकेशी/सुकेशा, चन्द्रमुखी/चन्द्रमुखा, पीनस्तनी/पीनस्तना आदि रूप सम्पन्न होते हैं।

प्रत्युदाहरण

1. सुकफा (बहुत कफ वाली), सुस्वेदा (बहुत पसीने वाली) में "स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्" सूत्र से वैकल्पिक 'ङीष्' प्रत्यय न होकर अदन्तलक्षण वाला "अजाद्यतष्टाप्" सूत्र से 'टाप्' प्रत्यय होता है। कारण कि कफ तथा स्वेद मूर्त्तिमान् (दृश्य), अविकारज तथा प्राणिस्थ होते हुए भी द्रव (तरल) पदार्थ होने से स्वाङ्गवाची नहीं है।
2. शोभनं ज्ञानं यस्याः सा सुज्ञाना (श्रेष्ठ ज्ञान वाली) में भी "स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्" सूत्र से वैकल्पिक 'ङीष्' प्रत्यय न होकर अदन्तलक्षण वाला "अजाद्यतष्टाप्" सूत्र से 'टाप्' प्रत्यय होता है। कारण कि 'ज्ञान' अद्रव (अतरल) पदार्थ, अविकारज तथा प्राणिस्थ होते हुए भी मूर्त्तिमान् (दृश्य) न होने से स्वाङ्गवाची नहीं है।
3. सुन्दरं मुखं यस्याः शालायाः सा सुमुखा शाला (सुन्दर द्वार वाला घर) में भी "स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्" सूत्र से वैकल्पिक 'ङीष्' प्रत्यय न होकर अदन्तलक्षण वाला "अजाद्यतष्टाप्" सूत्र से 'टाप्' प्रत्यय होता है। कारण कि यहाँ 'मुख' अद्रव (अतरल) पदार्थ, अविकारज तथा मूर्त्तिमान् (दृश्य) होते हुए भी प्राणिस्थ न होने से स्वाङ्गवाची नहीं है।
4. सुशोफा (बहुत सूजन वाली स्त्री) में भी "स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्" सूत्र से वैकल्पिक 'ङीष्' प्रत्यय न होकर अदन्तलक्षण वाला "अजाद्यतष्टाप्" सूत्र से 'टाप्' प्रत्यय होता है। कारण कि 'शोफ' (शोथ, सूजन) अद्रव (अतरल) पदार्थ, मूर्त्तिमान् (दृश्य) तथा प्राणिस्थ होते हुए भी विकारज अर्थात् शारीरिक विकार रूप रोग से उत्पन्न होने से स्वाङ्गवाची नहीं है।

अतत्स्थं तत्र दृष्टं च[2]

प्राणियों के वे अंग जो अब प्राणियों में स्थित नहीं हैं, परन्तु पहले उनमें देखे गये हों, वे भी 'स्वाङ्ग' कहलाते हैं। जैसे– सुकेशी सुकेशा वा रथ्या (सुन्दर केशों वाली गली)। यहाँ केश अब प्राणियों में स्थित नहीं हैं, परन्तु वे प्राणियों के ही अंग थे, इसलिए 'स्वाङ्ग' कहे जाते हैं, अतः तदन्त अदन्त 'सुकेश' प्रातिपदिक से पर वैकल्पिक 'ङीष्' प्रत्यय होता है।

तेन चेत्तत्तथायुतम्[3]

जिस प्रकार कोई अंग प्राणी में स्थित होता है, उसी प्रकार यदि अन्यत्र किसी मूर्त्तित आदि में स्थित होता है, तो वह अंग भी 'स्वाङ्ग' कहलाता है। जैसे– सुस्तनी सुस्तना वा प्रतिमा (सुन्दर स्तनों वाली मूर्त्तित) यहाँ स्तन प्राणियों की तरह प्रतिमा में भी हैं, इसलिए ये भी 'स्वाङ्ग' कहे जाते हैं। अतः तदन्त अदन्त 'सुस्तन' प्रातिपदिक से पर वैकल्पिक 'ङीष्' प्रत्यय होता है।

1. न विद्यते द्रवो द्रवत्वं (तरलता) यस्मिंस्तद् अद्रवम्। मूर्त्तिः=अवयवसंयोगोऽस्यास्तीति मूर्त्तिमत्। प्राणिषु=जन्तुषु विद्यमानं प्राणिस्थम्। अविकारजम्=रोगादिविकाराऽजन्यं च यत् तत् प्रथमं स्वाङ्गमित्यर्थः।
2. तच्छब्देन प्राणी परामृश्यते। अतत्स्थं=अप्राणिस्थम्, तत्र=प्राणिनि दृष्टं यत् तदपि स्वाङ्गमित्यर्थः।
3. तेन चेत्तत्तथायुतमिति तृतीयं स्वाङ्गलक्षणमिति बोध्यम्। अत्र भाष्ये 'स्वाङ्गमप्राणिनोऽपि' इति शेषः पूरितः। तेन=प्राणिस्थेन स्तनाद्यङ्गाकृतिकावयवविशेषेण तत्=अप्राणिद्रव्यं प्रतिमादि तथा=प्राणिद्रव्यवद् युतं=सम्बद्धं चेद् भवति तदा तत्=स्तनाद्यङ्गाकृतिकम् अप्राणिनोऽपि स्वाङ्गमित्यर्थः। (बालमनोरमायाम्)

आचार्य हेमचन्द्र ने अपने 'शब्दानुशासन' में इन तीनों लक्षणों को एक साथ बहुत सुन्दर ढ़ंग से पद्यबद्ध किया है, जो इस प्रकार है–

"अविकारोऽद्रवं मूर्त्तं प्राणिस्थं स्वाङ्गमुच्यते। च्युतं च प्राणिनस्तत्तद् निभं च प्रतिमादिषु।।"

(बृहद्–हैमवृत्ति, 2/4/38)

अतिकेशी– केशान् अतिक्रान्ता अतिकेशी=लम्बे केशों वाली स्त्री आदि अथवा केशों को जो लाङ्घ चुकी है अर्थात् केशों से अधिक लम्बी माला आदि।

केश शस्+अति "अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया" वार्तिक से 'केश शस्' द्वितीयान्त समर्थ सुँबन्त के साथ क्रान्तादि अर्थों के अन्तर्गत 'अतिक्रान्त' (पार कर चुका) अर्थ में विद्यमान 'अति' शब्द का प्रादि–समास हुआ।

केश शस्+अति "कृत्तद्धितसमासाश्च"[12] सूत्र द्वारा प्रादि–समाससंज्ञक 'केश शस्+अति' की 'प्रातिपदिक' संज्ञा हुई।

केश शस्+अति "सुँपो धातुप्रातिपदिकयोः"[13] सूत्र से 'केश शस्+अति' प्रातिपदिक के अवयवभूत 'शस्' सुँप् प्रत्यय का लुक् (अदर्शन) हुआ।

केश+अति "एकविभक्ति चाऽपूर्वनिपाते"[14] सूत्र द्वारा विग्रह में नियत=निश्चित विभक्ति द्वितीया विभक्ति में रहने वाला 'केश' शब्द की 'उपसर्जन' संज्ञा हुई।

केश+अति "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्"[15] सूत्र से समासविधायक शास्त्र "अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया" में प्रथमाविभक्ति से निर्दिष्ट=उच्चरित

अत्यादयः पदबोध्य 'अतिक्रान्त' अर्थ का वाचक 'अति' शब्द की 'उपसर्जन' संज्ञा हुई।

अति+केश "उपसर्जनं पूर्वम्"[16] सूत्र से उपसर्जनसंज्ञक 'अति' शब्द का पूर्व में प्रयोग हुआ।

अतिकेश सम्मेलन

अतिकेश+ङीष् "एकदेशविकृतमनन्यवत्" परिभाषा के अनुसार 'अतिकेश' शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा अक्षुण्ण रहने से "स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्" सूत्र से असंयोगोपध (जिसकी उपधा में संयुक्त वर्ण नहीं है, ऐसे), उपसर्जनसंज्ञक, स्वाङ्गवाची शब्द है– केश, तदन्त (वह 'केश' शब्द है, अन्त में जिसके, ऐसे), अदन्त 'अतिकेश' प्रातिपदिक से पर स्त्रीत्व की विवक्षा में विकल्प से 'ङीष्'[0] प्रत्यय हुआ।

अतिकेश+ङीष् "हलन्त्यम्"[17] सूत्र से उपदेश अवस्था 'ङीष्' प्रत्यय में अन्त्य हल् 'ष्' की तथा "लशक्वतद्धिते"[18] सूत्र से तद्धितभिन्न 'ङीष्' प्रत्यय के आदि में स्थित कवर्ग– 'ङ्' की इत्संज्ञा और "तस्य लोपः"[19] सूत्र से इत्संज्ञक 'ष्' एवं 'ङ्' वर्णों का लोप हुआ।

अतिकेश+ई यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्"[20] सूत्र से 'अतिकेश' शब्द से किये गये 'ङीष्' (ई) प्रत्यय पर रहते, व्यपदेशिवद्भाव से 'अतिकेश' है, आदि में 'अतिकेश' शब्दस्वरूप के तथा प्रकृति सहित वह शब्दस्वरूप भी 'अतिकेश' है, अतः 'अतिकेश' शब्दस्वरूप की 'अंग' संज्ञा हुई।

अतिकेश+ई "यचि भम्"[21] सूत्र से सर्वनामस्थानसंज्ञक से भिन्न 'सुँ' से लेकर 'कप्' प्रत्यय पर्यन्त के मध्य पठित व्यपदेशिवद्भाव से अजादि 'ई' (ङीष्) प्रत्यय परे रहते, पूर्व 'अतिकेश' शब्दसमुदाय की 'भ' संज्ञा हुई।

अतिकेश्+ई "अलोऽन्त्यस्य"[22] परिभाषा सूत्र की सहायता से "यस्येति च"[23] सूत्र से भसंज्ञक अंग 'अतिकेश' में अन्त्य अल् शकारोत्तर (श्+अ) अवर्ण (अ) का लोप हुआ, ईकार (ङीष्) पर रहते।

अतिकेशी वर्णसम्मेलन।

अतिकेशी+सुँ "ङ्याप्प्रातिपदिकात्", "प्रत्ययः", "परश्च" इन तीनों अधिकार सूत्रों के अन्तर्गत पठित "स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसांङ्यो–स्सुप्"[24] सूत्र से ङ्यन्त 'अतिकेशी' शब्द से पर एकत्व की विवक्षा में प्रथमा विभक्ति का एकवचनसंज्ञक 'सुँ' प्रत्यय हुआ।

अतिकेशी+सुँ (स्+उँ) "उपदेशेऽजनुनासिक इत्"[25] सूत्र से उपदेश अवस्था 'सुँ=स्+उँ' में अनुनासिक अच् 'उँ' की इत्संज्ञा एवं इत्संज्ञक 'उँ' का "तस्य लोपः" से लोप।

अतिकेशी+स् "यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्" सूत्र द्वारा 'अतिकेशी' शब्द से किये गये 'सुँ' (स्) प्रत्यय पर रहते, व्यपदेशिवद्भाव से 'अतिकेशी' है, आदि में 'अतिकेशी' शब्दस्वरूप के तथा प्रकृति सहित वह शब्दस्वरूप भी 'अतिकेशी' है, अतः 'अतिकेशी' शब्दस्वरूप की 'अंग' संज्ञा हुई।

अतिकेश+स् "अपृक्त एकाल् प्रत्ययः"[26] सूत्र से एक अल् वाला 'स्' (सुँ) प्रत्यय की 'अपृक्त' संज्ञा हुई।

अतिकेशी+स् "हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुँतिस्यपृक्तं हल्"[27] सूत्र से ङ्यन्त अंग 'अतिकेशी' से परे स्थित 'सुँ' सम्बन्धी अपृक्तसंज्ञक हल् 'स्' का लोप हुआ।

अतिकेशी रूप सम्पन्न हुआ।

0'अतिकेश' में तत्पुरुष समास है और तत्पुरुषसमास में "परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः"[28] सूत्र के अनुसार परवल्लिङ्गता (उत्तर पद के समान लिङ्ग) होती है, परन्तु यहाँ गति–समास होने के कारण प्राप्त परवल्लिङ्गता का "द्विगु–प्राप्ताऽऽपन्नाऽलम्पूर्व–गतिसमासेषु प्रतिषेधो वाच्यः" वार्तिक से निषेध होकर विशेष्य के अनुसार लिङ्ग होता है, अतः स्त्रीत्व की विवक्षा में विकल्प से 'ङीष्' प्रत्यय होता है।

विशेष ध्यातव्य

1. 'प्र' आदि की 'गति' संज्ञा होने से प्रादि–समास, गति–समास के अन्तर्गत ही समाहित हो जाता है।
2. "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" सूत्र से 'उपसर्जन' संज्ञा करने का फल "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से उपसर्जन–संज्ञक का पूर्व में प्रयोग करना है तथा "एकविभक्ति चाऽपूर्वनिपाते" सूत्र से 'उपसर्जन' संज्ञा करने का फल पूर्व प्रयोग से भिन्न 'ह्रस्व' आदि करना है।

नोट

"स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्" सूत्र से असंयोगोपध (जिसकी उपधा में संयुक्त वर्ण नहीं है, ऐसे), उपसर्जनसंज्ञक, स्वाङ्गवाची जो 'केश' शब्द है, तदन्त, अदन्त 'अतिकेश' प्रातिपदिक से पर स्त्रीत्व की विवक्षा में विकल्प से 'ङीष्' प्रत्यय होता है, अतः जिस पक्ष में 'ङीष्' प्रत्यय नहीं होता है, उस पक्ष में अदन्तलक्षण वाला "अजाद्यतष्टाप्" सूत्र से 'टाप्' प्रत्यय, 'टाप्' में अनुबन्धलोप, सवर्णदीर्घ, 'सुँ' प्रत्यय, 'सुँ' प्रत्यय में अनुबन्धलोप, 'स्' की अपृक्त संज्ञा व अपृक्तसंज्ञक हल् 'स्' का लोप होकर 'अतिकेशा' रूप सम्पन्न होता है।

चन्द्रमुखी

चन्द्र इव मुखं यस्याः सा चन्द्रमुखी=चन्द्रमा के समान सुन्दर मुखवाली स्त्री।

चन्द्र सुँ+मुख सुँ "अनेकमन्यपदार्थे"[29] सूत्र से अन्यपद के अर्थ में विद्यमान 'चन्द्र सुँ' समर्थ सुँबन्त का 'मुख सुँ' समर्थ सुँबन्त के साथ बहुव्रीहि समास हुआ।

चन्द्र सुँ+मुख सुँ "कृत्तद्धितसमासाश्च" सूत्र से बहुव्रीहि–समाससंज्ञक 'चन्द्र सुँ+मुख सुँ' की 'प्रातिपपदिक' संज्ञा हुई।

चन्द्र सुँ+मुख सुँ "सुँपो धातुप्रातिपदिकयोः" सूत्र से 'चन्द्र सुँ+मुख सुँ' प्रातिपदिक के अवयवभूत दोनों 'सुँ' सुँप् प्रत्ययों का लुक् (अदर्शन) हुआ।

चन्द्रमुख सम्मेलन।

चन्द्रमुख सर्वोपसर्जनो बहुव्रीहिः (बहुव्रीहि समास के सभी पद उपसर्जन=गौण होते हैं।)[1] वचन के अनुसार 'मुख' शब्द उपसर्जन है।

चन्द्रमुख+ङीष् "एकदेशविकृतमनन्यवत्" परिभाषा के अनुसार 'चन्द्रमुख' शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा अक्षुण्ण रहने से "स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्" सूत्र से असंयोगोपध (जिसकी उपधा में संयुक्त वर्ण न हो, ऐसे),

उपसर्जन, स्वाङ्गवाची शब्द है– मुख, तदन्त (वह 'मुख' शब्द है, अन्त में जिसके, ऐसे), अदन्त 'चन्द्रमुख' प्रातिपदिक से पर स्त्रीत्व की विवक्षा में विकल्प से 'ङीष्' प्रत्यय हुआ।

चन्द्रमुख+ङीष् "हलन्त्यम्" सूत्र से उपदेश अवस्था में 'ङीष्' प्रत्यय के अन्त्य हल् 'ष्' की तथा "लशक्वतद्धिते" सूत्र से तद्धितभिन्न 'ङीष्' प्रत्यय के आदि में स्थित कवर्ग– 'ङ्' की इत्संज्ञा और "तस्य लोपः" सूत्र से 'ष्' एवं 'ङ्' इत्संज्ञक वर्णों का लोप हुआ।

चन्द्रमुख+ई यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्" सूत्र से 'चन्द्रमुख' शब्द से किये गये 'ङीष्' (ई) प्रत्यय पर रहते, व्यपदेशिवद्भाव से 'चन्द्रमुख' है, आदि में 'चन्द्रमुख' शब्दस्वरूप के तथा प्रकृति सहित वह शब्दस्वरूप भी 'चन्द्रमुख' है, अतः 'चन्द्रमुख' शब्दस्वरूप की 'अंग' संज्ञा हुई।

चन्द्रमुख+ई "यचि भम्" सूत्र से सर्वनामस्थानसंज्ञक से भिन्न 'सुँ' से लेकर 'कप्' प्रत्यय पर्यन्त के मध्य पठित व्यपदेशिवद्भाव से अजादि 'ई' (ङीष्) प्रत्यय परे रहते, पूर्व 'चन्द्रमुख' शब्दसमुदाय की 'भ' संज्ञा हुई।

चन्द्रमुख्+ई "अलोऽन्त्यस्य" परिभाषा सूत्र की सहायता से "यस्येति च" सूत्र से भसंज्ञक अंग 'चन्द्रमुख' में अन्त्य अल् खकारोत्तर (ख्+अ) अवर्ण (अ) का लोप हुआ, ईकार (ङीष्) पर रहते।

चन्द्रमुखी वर्णसम्मेलन।

चन्द्रमुख+सुँ "ङ्याप्प्रातिपदिकात्", "प्रत्ययः", "परश्च" इन तीनों अधिकार सूत्रों के अन्तर्गत पठित "स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसो –सांङ्योस्सुप्" सूत्र से ङ्यन्त 'चन्द्रमुखी' शब्द से पर एकत्व की विवक्षा में प्रथमा विभक्ति का एकवचनसंज्ञक 'सुँ' प्रत्यय हुआ।

चन्द्रमुख+सुँ "उपदेशेऽजनुनासिक इत्" सूत्र से उपदेश अवस्था 'सुँ=स्+उँ' में अनुनासिक अच् 'उँ' की इत्संज्ञा एवं इत्संज्ञक 'उँ' का "तस्य लोपः" से लोप।

चन्द्रमुख+सुँ "यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्" सूत्र द्वारा 'चन्द्रमुखी' शब्द से किये गये 'सुँ' (स्) प्रत्यय पर रहते, व्यपदेशिवद्भाव से 'चन्द्रमुखी' है, आदि में 'चन्द्रमुखी' शब्दस्वरूप के तथा प्रकृति सहित वह शब्दस्वरूप भी 'चन्द्रमुखी' है, अतः 'चन्द्रमुखी' शब्दस्वरूप की 'अंग' संज्ञा हुई।

चन्द्रमुखी+स् "अपृक्त एकाल् प्रत्ययः" सूत्र से एक अल् वाला 'स्' (सुँ) प्रत्यय की 'अपृक्त' संज्ञा हुई।

चन्द्रमुखी+स "हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुँतिस्यपृक्तं हल्" सूत्र से ङ्यन्त अंग 'चन्द्रमुखी' से परे स्थित 'सुँ' सम्बन्धी अपृक्तसंज्ञक हल् 'स्' का लोप हुआ।

चन्द्रमुखी रूप सम्पन्न हुआ।

1. बहुव्रीहि समास में अन्यपदार्थ की प्रधानता होने से बहुव्रीहि समास के सभी समस्यमान पद उपसर्जन अर्थात् गौण होते हैं।

नोट

"स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्" सूत्र से असंयोगोपध (जिसकी उपधा में संयुक्त वर्ण नहीं है, ऐसे), उपसर्जनसंज्ञक, स्वाङ्गवाची जो 'मुख' शब्द है, तदन्त, अदन्त 'चन्द्रमुख' प्रातिपदिक से पर स्त्रीत्व की विवक्षा में विकल्प से 'ङीष्' प्रत्यय होता है, अतः जिस पक्ष में 'ङीष्' प्रत्यय नहीं होता है, उस पक्ष में अदन्त लक्षण वाला "अजाद्यतष्टाप्" सूत्र से 'टाप्' प्रत्यय, 'टाप्' में अनुबन्धलोप, सवर्णदीर्घ, 'सुँ' प्रत्यय, 'सुँ' प्रत्यय में अनुबन्धलोप, 'स्' की अपृक्त संज्ञा व अपृक्तसंज्ञक हल् 'स्' का लोप होकर 'चन्द्रमुखा' रूप सम्पन्न होता है।

प्रत्युदाहरण–

1. असंयोगोपधात् किम्? सुगुल्फा– प्रकृत सूत्र में 'असंयोगोपधात्' पद का ग्रहण होने के कारण स्वाङ्गवाची, उपसर्जनसंज्ञक शब्द की उपधा में संयोग होने पर उस तदन्त, अदन्त प्रातिपदिक से पर 'ङीष्' प्रत्यय नहीं होता, अपितु अदन्तलक्षण वाला "अजाद्यतष्टाप्" सूत्र से 'टाप्' प्रत्यय होता है। जैसे– 'शोभनौ गुल्फौ यस्याः सा सुगुल्फा' (सुन्दर गुल्फों=गिट्टों वाली)। 'सु गुल्फ+औ' इस अलौकिक विग्रह में "अनेकमन्यपदार्थे" सूत्र से बहुव्रीहिसमास, प्रातिपदिक संज्ञा व सुँब्लुक् होकर 'सुगुल्फ' प्रातिपदिक सम्पन्न होता है। यहाँ 'गुल्फ' इस स्वाङ्गवाची, उपसर्जनसंज्ञक शब्द की उपधा में 'ल्फ' का संयोग विद्यमान है, इसलिए प्रकृत सूत्र से तदन्त, अदन्त प्रातिपदिक 'सुगुल्फ' से वैकल्पिक 'ङीष्' नहीं हुआ। ऐसी स्थिति में "अजाद्यतष्टाप्" से 'टाप्' प्रत्यय, 'टाप्' में अनुबन्धलोप, सवर्णदीर्घ, 'सुँ' प्रत्यय, 'सुँ' प्रत्यय में अनुबन्धलोप, 'स्' की अपृक्त संज्ञा व अपृक्तसंज्ञक हल् 'स्' का लोप होकर 'सुगुल्फा' रूप सम्पन्न होता है। इसी तरह सुपार्श्वा, सुवक्त्रा, सुहस्ता आदि में वैकल्पिक 'ङीष्' प्रत्यय का अभाव समझना चाहिए।
2. उपसर्जनात् किम्? शिखा– यदि असंयोगोपध, स्वाङ्गवाची शब्द उपसर्जनसंज्ञक नहीं होगा, तो भी प्रकृत सूत्र से विकल्प से 'ङीष्' प्रत्यय नहीं होता है। जैसे– 'शिखा' (चोटी)। यहाँ 'शीङ् स्वप्ने' धातु से "शीङो ह्रस्वश्च" उणादिसूत्र से 'ख' प्रत्यय तथा धातु को ह्रस्व होकर 'शिख' रूप सिद्ध होता है। इसकी उपसर्जन संज्ञा नहीं हुई है, अतः उपसर्जनसंज्ञक न होने के कारण व्यपदेशिवद्भाव से तदन्त, अदन्त प्रातिपदिक 'शिख' होने पर भी वैकल्पिक 'ङीष्' नहीं हुआ। तब अदन्तलक्षण वाला "अजाद्यतष्टाप्" सूत्र से 'टाप्' प्रत्यय, 'टाप्' में अनुबन्धलोप, सवर्णदीर्घ, 'सुँ' प्रत्यय, 'सुँ' प्रत्यय में अनुबन्धलोप, 'स्' की अपृक्त संज्ञा व अपृक्तसंज्ञक हल् 'स्' का लोप होकर 'शिखा' रूप सम्पन्न होता है।

नोट

कुछ लोग 'सुशिखा' पद को प्रत्युदाहरण मानते हैं, क्योंकि उनका मानना है कि 'शोभना शिखा इति सुशिखा' यहाँ "कु–गति–प्रादयः"[30] सूत्र से प्रादि–तत्पुरुष–समास में प्रथमानिर्दिष्ट पदबोध्य होने के कारण 'सु' तो उपसर्जनसंज्ञक है, परन्तु 'शिखा' शब्द उपसर्जनसंज्ञक नहीं है, अतः इससे पर प्रकृत सूत्र से वैकल्पिक 'ङीष्' प्रत्यय नहीं होगा, परन्तु उन लोगों का यह कथन ठीक नहीं है, क्योंकि 'शिखा' शब्द अदन्त नहीं

है, अतः अदन्त न होने के कारण इससे विकल्प से 'ङीष्' प्रत्यय प्राप्त ही नहीं हो सकता है।

विशेष

यहाँ ध्यातव्य है कि "नासिकोदरौष्ठजङ्घादन्तकर्णशृङ्गाच्च" (4/1/55) सूत्र के अनुसार ओष्ठ, जङ्घा, दन्त, कर्ण और शृङ्ग इन पाँच संयोगोपधों के अन्त में आने पर निषेध की प्रवृत्ति नहीं होती है, अपितु विकल्प से 'ङीष्' प्रत्यय हो जाता है। जैसे– बिम्बौष्ठी/बिम्बौष्ठा, दीर्घजङ्घी/दीर्घजङ्घा, समदन्ती/समदन्ता, चारुकर्णी/चारुकर्णा, तीक्ष्णशृङ्गी/तीक्ष्णशृङ्गा।

"नासिकोदरौष्ठजङ्घादन्तकर्णशृङ्गाच्च" सूत्र में 'च' पद का ग्रहण होने के कारण अङ्ग, गात्र, कण्ठ और पुच्छ इन चार संयोगोपध पदों का भी ग्रहण हो जाता है, जिससे प्रकृत सूत्र से अङ्गादिशब्दान्त प्रातिपदिक से विकल्प से 'ङीष्' प्रत्यय हो जाता है। जैसे– मृद्वङ्गी/मृद्वङ्गा, तनुगात्री/तनुगात्रा, स्निग्धकण्ठी/स्निग्धकण्ठा, कल्याणपुच्छी/कल्याणपुच्छा।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध लेख का उद्देश्य यह है कि "स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्" सूत्र से सम्बद्ध विभक्ति, वचन–निर्देश, सूत्रगत सन्धि–विच्छेद, समास, विशेष, अधिकार का ज्ञान तथा सूत्र के अर्थ का तात्त्विक ज्ञान के साथ–साथ सूत्र में आने वाले 'स्वाङ्ग' शब्द का पारिभाषिक अर्थ, उदाहरण, प्रत्युदाहरण का ज्ञान साथ ही सूत्र के उदाहरण, प्रत्युदाहरण, सूत्र से सम्बद्ध अपवाद सूत्र, अपवाद सूत्रों का उदाहरण व विभिन्न कठिन शब्दों के व्युत्तिपरक अर्थ का तत्त्वतः ज्ञान होगा। उदाहरणों में प्रकृत सूत्र की प्रवृत्ति तथा प्रत्युदाहरणों में अप्रवृत्ति का स्पष्ट रूप से ज्ञान होगा।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध लेख का निष्कर्ष इस रूप में कहा जा सकता है कि सूत्र व सूत्रार्थ का तथ्यात्मक ज्ञान, पारिभाषिक शब्दों का सोदाहरण ज्ञान, उदाहरणों में सूत्रों की प्रवृत्ति तथा प्रत्युदाहरणों में अप्रवृत्ति का स्पष्ट रूप से ज्ञान होने के पश्चात् जनसामान्य तथा विशेष रूप से संस्कृत विषय में भी व्याकरणेतर छात्र–छात्राओं का संस्कृ–त व्याकरण शास्त्र के प्रति रुचि उत्पन्न होगी। साथ ही व्याकरण शास्त्र की सुस्पष्टता, तार्किकता, वैज्ञानिकता के ज्ञान के साथ 'व्याकरण शास्त्र कठिन शास्त्र है' इस प्रकार का भ्रमात्मक संदेह दूर होगा।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रपाठ– 8/4/40*
2. *पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रपाठ– 6/1/87*
3. *पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रपाठ– 8/2/39*
4. *पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रपाठ– 3/1/1*
5. *पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रपाठ– 3/1/2*
6. *पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रपाठ– 4/1/1*
7. *पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रपाठ– 4/1/3*
8. *पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रपाठ– 4/1/4*
9. *पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रपाठ– 4/1/40*
10. *पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रपाठ– 4/1/53*
11. *पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रपाठ– 1/1/27*
12. *पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रपाठ– 1/2/46*
13. *पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रपाठ– 2/4/71*
14. *पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रपाठ– 1/2/44*
15. *पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रपाठ– 1/2/43*
16. *पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रपाठ– 2/2/30*
17. *पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रपाठ– 1/3/3*
18. *पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रपाठ– 1/3/8*
19. *पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रपाठ– 1/3/9*
20. *पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रपाठ– 1/4/13*
21. *पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रपाठ– 1/4/18*
22. *पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रपाठ– 1/1/52*
23. *पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रपाठ– 6/4/148*
24. *पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रपाठ– 4/1/2*
25. *पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रपाठ– 1/3/2*
26. *पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रपाठ– 1/2/41*
27. *पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रपाठ– 6/1/68*
28. *पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रपाठ– 2/4/26*
29. *पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रपाठ– 2/2/24*
30. *पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रपाठ– 2/2/18*